

International Journal Of Multi Research

Online ISSN: 3107 - 7676

IJMR 2026; 2(3): 13-19

2026 May - June

www.allmultiresearchjournal.com

Received: 08-03-2026

Accepted: 12-04-2026

Published: 10-05-2026

डिजिटल नैरेटिव्स: भारतीय साहित्य और डिजिटल मीडिया का संगम

अर्चना श्रीवास्तव, मृदुला निगम

मानविकी विभाग, साबरमती विश्वविद्यालय अहमदाबाद, गुजरात, भारत

Corresponding Author; अर्चना श्रीवास्तव

सारांश

डिजिटल ज़माने में भारतीय साहित्य के दिलचस्प और डायनामिक फील्ड को डिजिटल स्टोरीटेलिंग के ज़रिए देखा जाता है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, मल्टीमीडिया फॉर्मेट और इंटरैक्टिव स्टोरीटेलिंग एक्सपीरियंस के ज़रिए क्लासिक स्टोरीटेलिंग को आज के डिजिटल मीडिया के साथ मिलाकर एक नई तरह की लिटरेरी प्रेजेंटेशन बनाई जाती है। इक्कीसवीं सदी में, डिजिटल टेक्नोलॉजी ने एक क्रांतिकारी बदलाव लाया है जो लिटरेरी विशेषताओं और स्ट्रक्चर को मापने के तरीके के साथ-साथ लिटरेचर के प्रोडक्शन और डिस्ट्रिब्यूशन पर भी असर डालता है। भारत की डिजिटल क्रांति ने कई भाषाओं में एक समृद्ध लिटरेरी विरासत छोड़ी है। देश में रीडर्स और पब्लिशर्स के साथ, यह राइटर्स को नए मौकों और चैलेंज दोनों देता है। भारत में ऑनलाइन लिटरेचर की ग्रोथ पर असर डालने वाले खास कल्चरल, लिंग्विस्टिक और इकोनॉमिक फैक्टर्स का मूल्यांकन करके, यह स्टडी इंटरनेट ज़माने में भारतीय लिटरेचर के अडैप्टेशन्स को एक्सप्लोर करती है। डिजिटल नैरेटिव्स ने दुनिया भर में 21वीं सदी के लिटरेचर के असर को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। पिछले कुछ दशकों में, डिजिटल मीडिया के ज़रिए कहानियों के क्रिएशन, रिसेप्शन और डिस्मिनेशन में बड़े बदलाव हुए हैं। डिजिटल सेटिंग्स में डिजिटल नैरेटिव्स ट्रेडिशनल लिटरेचर के लिए सिर्फ एक पब्लिकेशन मीडियम से कहीं ज्यादा हैं; उन्हें अपनी आर्टिस्टिक पहचान डिजिटल एलिमेंट्स से मिलती है। नए लिटरेरी फॉर्म, रीडर-ऑथर रिलेशनशिप, और डिजिटल और कन्वेंशनल कहानियों के बीच की लाइनों के धुंधलेपन के इवैल्यूएशन के ज़रिए, यह आर्टिकल यह देखता है कि मौजूदा भारतीय लिटरेरी ट्रेडिशन डिजिटल कॉन्टेक्ट में कैसे अडैप्ट और इवॉल्व होते हैं।

कूट शब्द : भारत में डिजिटल लिटरेरी लैंडस्केप, सोशल मीडिया लिटरेचर: रीडरशिप के लिए नए रास्ते, डिजिटल लिटरेरी कम्युनिटीज़ और कोलैबोरेटिव राइटिंग, डिजिटल लिटरेरी प्रोडक्शन में चैलेंज और टेंशन, इंडियन डिजिटल लिटरेचर में केस स्टडीज़, इंडियन डिजिटल लिटरेचर के लिए फ्यूचर डायरेक्शन

प्रस्तावना

प्रकाशन का लोकतंत्रीकरण

क्योंकि भारत ने पुराने समय से बड़े शहरों में पब्लिशिंग आउटलेट्स को जाने-माने लिटरेरी लेखकों की देखरेख में रखा है, इसलिए मॉडर्न

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने पूरे देश में पब्लिकेशन के मौकों बढ़ा दिए हैं। पहले लेखकों को रोकने वाली ज़्यादातर रुकावटें इंटरनेट मीडिया की वजह से दूर हो गई हैं। नतीजतन, लेखक पारंपरिक गेटकीपरों के दखल के बिना अपना काम फैलाने के लिए

आज़ाद हैं। सेल्फ-पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म, लिटरेरी ब्लॉग और सोशल मीडिया टेक्नोलॉजी ने ऐसे दूसरे डिस्ट्रीब्यूशन तरीके बनाए हैं जिनसे रीडर्स को कम प्रतिनिधित्व वाले ग्रुप्स, ग्रामीण इलाकों और उभरते हुए लेखकों को ढूँढने में मदद मिलती है। साउथ एशियन लिटरेरी रिसर्च बाप्सी सिधवा के अनुसार, "इंटरनेट असल में लिटरेरी क्रिएशन पर मेट्रोपॉलिटन कंट्रोल को खत्म कर देता है, जिससे सबाल्टर्न आवाज़ों को पब्लिकेशन स्पेस मिल पाता है जिसे कैनन से बाहर रखा गया था" (45)। भारतीय लिटरेरी दुनिया में, एक्सेस डेमोक्रेटाइजेशन खास तौर पर ज़रूरी है क्योंकि यह उन रुकावटों को तोड़ता है जिन्होंने पुराने समय में जाति के लोगों, निचले सामाजिक तबके के लोगों और अलग जेंडर और क्षेत्रीय पहचान वाले लोगों को अलग रखा है।

डिजिटल साहित्य और भाषाई विविधता भारत में, जहाँ 22 ऑफिशियल भाषाएँ हैं और सैकड़ों रीजनल मुहावरे ऑनलाइन मिल गए हैं, ऑनलाइन स्पेस ने देश की कई भाषाओं के कम्युनिकेशन और एक्सप्लोर करने के नए रास्ते खोले हैं। लाइब्रेरी और एनसाइक्लोपीडिया होने के बावजूद, यूज़र्स ने हायर एजुकेशन के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया है। डिजिटल स्पेस की वजह से हायर लिटरेरी माहौल में भाषा का दबदबा बन गया है। तमिल, मलयालम, बंगाली, मराठी और हिंदी भाषाओं को सपोर्ट करने वाली वेबसाइट, एप्लिकेशन और ऑनलाइन कम्युनिटी ऐसी डायनैमिक जगह बन गई हैं जहाँ लेखक अपने काम शेयर करते हैं और एक्सपेरिमेंट करते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म की क्रिएटिव लैंग्वेज ब्लेंडिंग को आसान बनाने की क्षमता इसके फायदों में से एक है। रुक्मिणी भाया नायर के अनुसार, लैंग्वेज-स्विचिंग स्ट्रेटेजी और ट्रांसलिंग्विस्टिक स्टाइल का इस्तेमाल डिजिटल इंडियन राइटिंग में कई

लिंग्विस्टिक सिस्टम को ब्लेंड करने के लिए किया जाता है जो मॉडर्न इंडियन मल्टीलिंग्विज़्म को दिखाते हैं।

(78) प्रतिलिपि दस से अधिक भारतीय भाषाओं में सामग्री होस्ट करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है, जो हर महीने लाखों उपयोगकर्ताओं को आकर्षित करता है।

उपन्यास शैलियाँ और रूप डिजिटल मीडिया के बढ़ने की वजह से भारतीय माहौल में डिजिटल लिटरेरी जॉनर में खास बदलाव आए हैं। WhatsApp पर सीरियल नॉवेल पॉपुलर हो रहे हैं, वहीं माइक्रोफिक्शन इंस्टाग्राम फॉलोअर्स और ट्विटर यूज़र्स के बीच पसंदीदा है। फेसबुक यूज़र्स कविता पढ़ते हैं, और इंटरैक्टिव मीडिया प्लेटफॉर्म दर्शकों को खींचने के लिए टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो और इंटरैक्शन का इस्तेमाल करते हैं। इंटरनेट प्लेटफॉर्म की टेक्नोलॉजी क्षमताओं को डिजिटल कहानियों में भारतीय संस्कृति के पारंपरिक कहानी कहने के पहलुओं के साथ जोड़ा गया है। TwitterKatha ट्विटर राइटिंग को सपोर्ट करता है, जो जातक और पंचतंत्र जैसे पारंपरिक भारतीय साहित्य में पाई जाने वाली छोटी कहानियों के स्टाइल को बनाए रखता है। हाइपरटेक्स्ट और मल्टीमीडिया एलिमेंट्स के इस्तेमाल से, भारत में डिजिटल पोएट्री गज़ल और दोहा जैसे पारंपरिक काव्य रूपों का इस्तेमाल करती है।

इंस्टाग्राम पोएट्री और विज़ुअल लिटरेचर का उदय इंस्टाग्राम पोएट्री भारतीय कवियों के बीच पॉपुलर हो गई है। उदाहरण के लिए, रूपी कौर कई नए भारतीय कवियों को आसान भाषा और आकर्षक इमेजरी का इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करती हैं। दीक्षा बिजलानी के साथ, हरनिध कौर ने व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों और भारतीय संस्कृति के पहलुओं के बारे में आसान लेकिन दिलचस्प

पोएट्री के ज़रिए आज के सामाजिक मुद्दों की जांच करके एक बड़ा फैन बेस बनाया है। इस ट्रेंड में मुश्किल मेटाफर, पुराने संकेतों और नुकसानदायक भाषाई मुद्दों पर ज़ोर देना पारंपरिक भारतीय साहित्यिक परंपराओं से एक बड़ा बदलाव दिखाता है। लिटरेरी क्रिटिक सैकत मजूमदार इस बात पर ज़ोर देते हैं कि कैसे पारंपरिक साहित्यिक मंडलियां सादी, सीधी-सादी इंस्टाग्राम पोएट्री की आलोचना करती हैं, लेकिन यह यह भी दिखाता है कि कैसे नए प्लेटफॉर्म पोएट्री को बड़े दर्शकों तक पहुंचाते हैं।

ट्विटर संक्षिप्तता और कल्पना

ट्विटर पर एक्सोल्यूट कैरेक्टर्स पर लगी रोक की वजह से, भारतीय लेखकों ने माइक्रोफिक्शन के लिए एक नई लिटरेरी टेक्निक डेवलप की है जो उनकी कहावतों और कहावतों वाली राइटिंग की विरासत को आगे बढ़ाती है। कम शब्दों में पूरी कहानियाँ लिखकर, टाइनी टैल्स ने इस स्टाइल के डेवलपमेंट को लीड किया। क्योंकि डिजिटल ज़माने में लोग ज़्यादा तेज़ी से पढ़ते हैं और सुभाषितों और शेरों के ज़रिए भारतीय कल्चर में इस्तेमाल होने वाले छोटे रूप को महत्व देते हैं, इसलिए ये छोटी कहानियाँ पॉपुलर हो गईं। अंजलि पटेल की रिसर्च के मुताबिक, भारत में ट्विटर फिक्शन, सुझाव और छोटेपन के क्लासिक लिटरेरी तरीकों को डिजिटल दुनिया में शामिल करता है। (89)। क्योंकि वे आज के रीडर्स के लिए ट्रेडिशनल फॉर्मेट को बेहतर बना सकते हैं, इसलिए यह तर्क दिखाता है कि डिजिटल लिटरेरी कामों को ट्रेडिशनल लिटरेचर को डिस्टर्ब करने की ज़रूरत नहीं है।

राइटर्स के लिए ऑनलाइन कम्युनिटी और वर्कशॉपराइटर्स ऑनलाइन लिटरेरी कम्युनिटी बना सकते हैं जो लोगों को सोशल या ज्योग्राफिकल रुकावटों के पार एक साथ लाती हैं। वे कहीं भी रहते हों, इंडियन राइटर ऑनलाइन राइटिंग क्लास, क्रिटिक ग्रुप और लिटरेरी फोरम के ज़रिए मिलकर

काम कर सकते हैं और अपनी लिखने की काबिलियत को बढ़ा सकते हैं। राइटर फोरम, इंडिब्लॉगर्स और कैफ़ेराटी ने ऑनलाइन स्पेस बनाए हैं जो उभरते हुए राइटर्स को पीयर इवैल्यूएशन और मेंटरिंग के लिए एक प्लेटफॉर्म देते हैं। इंडियन राइटर्स के लिए, जिनके पास क्रिएटिव एजुकेशन के बहुत कम मौके हैं और ज्योग्राफिकल दूरी की वजह से साथियों से जुड़ने में मुश्किल होती है, ये ग्रुप खास तौर पर ज़रूरी हैं। रहमान (156) के मुताबिक, "इंडिया में डिजिटल लिटरेरी कम्युनिटी न सिर्फ आर्टिस्टिक डेवलपमेंट के लिए जगह के तौर पर काम करती हैं, बल्कि लिटरेरी दुनिया में ट्रेडिशनल हायरार्की के खिलाफ विरोध की जगहों के तौर पर भी काम करती हैं।"

इंटरैक्टिव और सहयोगात्मक कहानी सुनाना

आजकल, ऑडिबल, लिब्बी लिब्रिवॉक्स और ऑडियोबुक्स जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म अपने मिलकर कहानी कहने के स्टाइल की वजह से बहुत पॉपुलर हो रहे हैं, जो लिटरेचर बनाने वालों के पुराने पैटर्न को तोड़ता है।

सभी इंडस्ट्रीज़ में डिजिटल प्लेटफॉर्म पर नए बदलावों को हमेशा स्वीकार किया जाता है और उनकी इजाज़त दी जाती है। इससे इस लिटरेचर के लेखकों के बारे में पारंपरिक सोच को चुनौती देने के लिए नए कोऑपरेटिव तरीकों को मुमकिन बनाया जा सकता है। कोलैबोरेटिव कॉम्पिक्स इंडिया प्लेटफॉर्म के ज़रिए, लेखक और इलस्ट्रेटर पाठकों के साथ मिलकर ऐसी कहानियाँ बना सकते हैं जो कई क्रिएटिव नज़रिए दिखाती हैं। पारंपरिक भारतीय बोलकर कहानी सुनाने की परंपराओं में एक साथ कहानी बनाना शामिल था जिसे कई टैलर के ज़रिए आगे बढ़ाया जाता था जो अपनी व्याख्याएँ जोड़ते थे। इससे पाठक इंटरैक्टिव फिक्शन के ज़रिए हर बार कहानी को प्रभावित कर सकता है, जो कहानी लेखकों और दर्शकों के बीच

की दूरी को कम करता है। डिजिटल मीडिया एक्सपर्ट पूनम त्रिवेदी के अनुसार, "भारत में डिजिटल कहानी सुनाने का इंटरैक्टिव और कोलैबोरेटिव नेचर परंपरा से कोई बड़ा बदलाव नहीं बल्कि लंबे समय से चली आ रही सांस्कृतिक प्रथाओं का एक टेक्नोलॉजिकल विस्तार है" (203)।

लोक और शास्त्रीय साहित्य का डिजिटलीकरण डिजिटल टेक्नोलॉजी से आए बदलाव की वजह से भारत की बहुत सारी साहित्यिक दौलत को अब इकट्ठा किया जा सकता है और बांटा जा सकता है। डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया और ट्रेडिशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी, पढ़ने वालों को नई एक्सेस देने के लिए संस्कृत, फ़ारसी, तमिल और दूसरी भाषाओं की हजारों रचनाओं को डिजिटल तकनीकों का इस्तेमाल करके बदल रही हैं। पारंपरिक मौखिक रचनाओं के डिजिटल बचाव के लिए बनाए गए प्रोजेक्ट्स से उन परंपराओं को बचाया जा रहा है जो शायद इंसानी याददाश्त से गायब हो जातीं। कल्चरल हिस्टोरियन रोमिला थापर के मुताबिक, "भारत के साहित्यिक अतीत का डिजिटलाइजेशन सिर्फ एक आर्काइव करने का काम नहीं है, बल्कि आज के समय के लिए परंपराओं की एक क्रिएटिव नई सोच है" (267)।

प्राचीन ग्रंथ और हाइपरटेक्स्ट

क्योंकि पारंपरिक भारतीय टेक्स्ट में टेक्स्ट की जानकारी और मुश्किल कहानी से जुड़े कई जुड़ाव होते हैं, इसलिए हाइपरटेक्स्ट का नेटवर्क वाला नेचर उन्हें असरदार तरीके से एक्सप्लोर करना मुमकिन बनाता है। यूजर्स डिजिटल प्लेटफॉर्म को हाइपरटेक्स्ट की खासियतों के साथ जोड़कर क्रिटिकल कमेंट्री और महाभारत, कथासरित्सागर और इसी तरह के टेक्स्ट के हिस्सों के अलग-अलग एडिशन को एक्सेस कर सकते हैं। हालांकि, लिटरेरी हिस्ट्री के जानकारों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली हिस्टोरिकल क्लासिफिकेशन टेक्नीक

अब फिर से शुरू हो गई हैं, जब पुराने लिटरेरी कंटेंट को डिजिटल प्लेटफॉर्म के ज़रिए आज के डिजिटल फॉर्म के साथ जोड़ा जाता है। डिजिटल ह्यूमैनिटीज के स्पेशलिस्ट के तौर पर, अमलान दासगुप्ता का सुझाव है कि "डिजिटल हाइपरटेक्स्ट के ज़रिए क्लासिकल इंडियन लिटरेचर का सुधार पुरानी कहानी कहने की टेक्नीक और आज के डिजिटल एस्थेटिक्स के बीच स्ट्रक्चरल समानताएं दिखाता है" (134)।

भाषाई पदानुक्रम और डिजिटल विभाजन

हालांकि डिजिटल प्लेटफॉर्म में डेमोक्रेटिक मौके देने की क्षमता है, लेकिन पूरे भारतीय इलाके में उन तक पहुंच अलग-अलग है। कौन से ग्रुप डिजिटल लिटरेचर कल्चर में शामिल हो सकते हैं, यह सोशियो-इकोनॉमिक पोजीशन, ज्योग्राफिक लोकेशन, जेंडर और एजुकेशनल बैकग्राउंड के आधार पर बंटवारे से तय होता है। हालांकि शहरी और ग्रामीण आबादी के बीच काफी अंतर है, लेकिन मौजूदा आंकड़े बताते हैं कि भारत में इंटरनेट की पहुंच लगभग 45% तक पहुंच गई है (इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया 2023)। क्योंकि वे अपने रिसोर्स इसी में लगाते हैं, इसलिए डिजिटल डोमेन में एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन रीजनल भाषा के लिटरेचर से ज़्यादा इंग्लिश कंटेंट को प्राथमिकता देते हैं। लिटरेरी हिस्टोरियन फ्रांसेस्का ओरसिनी का तर्क है कि क्योंकि स्ट्रक्चरल अन्याय अभी भी यह तय करते हैं कि आवाज़ सुनी जाती है या नहीं, इसलिए हमें यह देखना होगा कि डिजिटल लिटरेरी प्रोडक्शन के तरीके डेमोक्रेसी को कैसे आगे बढ़ाते हैं (189)।

एल्गोरिथमिक क्यूरेशन और व्यावसायीकरण

डिजिटल लिटरेचर के कमर्शियलाइजेशन के ट्रेंड्स की वजह से नॉन-मेनस्ट्रीम और एक्सपेरिमेंटल राइटर्स के लिए अपना काम पब्लिश करवाना मुश्किल हो जाता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के

एल्गोरिदम ट्रेडिशनल किताबों को मार्केटबल कंटेंट के साथ सजेस्ट करते हैं क्योंकि उनका बिज़नेस मॉडल एडवर्टाइजमेंट रेवेन्यू कमाने के लिए यूजर एंगेजमेंट पर डिपेंड करता है। प्रमोद के. नायर के अनुसार, "डिजिटल लिटरेचर का एल्गोरिदमिक गवर्नेंस क्रिटिकल इवैल्यूएशन पर नहीं बल्कि पॉपुलैरिटी और एंगेजमेंट के मेट्रिक्स पर आधारित कैनोनिकिटी के नए रूप बनाने का खतरा पैदा करता है" (223)। भारत में कमर्शियल वायबिलिटी आर्टिस्टिक क्रिएटिविटी पर बहुत प्रेशर डालती है क्योंकि लेखक अभी भी बहुत ज़्यादा फाइनेंशियल स्ट्रेस में हैं।

केरल में डिजिटल लिटरेरी रेवोल्यूशन दक्षिण भारत के एक राज्य के तौर पर केरल का स्टेटस इसे डिजिटल लिटरेचर के डेवलपमेंट को ट्रैक करने के लिए एक दिलचस्प केस स्टडी बनाता है। अपनी जानी-मानी लिटरेरी विरासत और लगभग हर जगह पढ़ने की क्षमता के कारण, केरल के लोगों ने डिजिटल पब्लिकेशन के लिए बहुत ज़्यादा उत्साह दिखाया है। रीजनल भाषाओं में डिजिटल पब्लिशिंग के लिए सफल बिज़नेस स्ट्रेटेजी DC Books Online और मलयालम ई-बुक्स से मिलती हैं। केरल में, डिजिटल कम्युनिकेशन प्लेटफॉर्म ऑनलाइन फेस्टिवल, रीडिंग क्लब और दूर-दराज के राइटर रेजीडेंसी को आसान बनाते हैं जो भारत और पूरे डायस्पोरा के मलयालम राइटर को एक साथ लाते हैं। PK कल्चरल क्रिटिक राजशेखरन के अनुसार, "केरल का डिजिटल लिटरेरी इकोसिस्टम दिखाता है कि सही इंस्टीट्यूशनल स्ट्रक्चर और कल्चरल प्रैक्टिस से सपोर्ट मिलने पर रीजनल भाषा का लिटरेचर इंटरनेट के ज़माने में कैसे आगे बढ़ सकता है" (156)।

दलितों द्वारा डिजिटल साहित्य

दलित लेखक जो अपनी जाति के बैकग्राउंड की वजह से भेदभाव झेलते हैं, उन्हें अब डिजिटल ज़माने की वजह से पहली बार खुद को दिखाने

और कम्युनिटी बनाने का मौका मिला है। क्योंकि पुराने पब्लिशिंग ऑर्गनाइज़ेशन ने हमेशा माइनोंरिटी लेखकों के लिए खास अधिकार दिखाए हैं, इसलिए ब्लॉग और सोशल मीडिया टेक्नोलॉजी वाली मॉडर्न डिजिटल वेबसाइटें अभी दलित पब्लिकेशन के लिए ज़रूरी डिस्ट्रीब्यूशन का ज़रिया बन गई हैं। दलित लेखकों को पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म राउंडटेबल इंडिया, सवारी और दलित कैमरा के ज़रिए ऐसा काम करने का मौका दिया जाता है जो समाज की आम सोच को चुनौती देता है और जाति के जुल्म को दिखाता है। एस. दलित फेमिनिस्ट लेखिका आनंद दिखाती हैं कि कैसे "डिजिटल मीडिया ने दलित साहित्य को गेटकीपर को बायपास करने और सीधे पाठकों से बात करने की इजाज़त दी है, जिससे जाति-विरोधी बातचीत और पॉलिटिकल लामबंदी के लिए नई गुंजाइशें पैदा हुई हैं" (78)।

साहित्य सृजन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

भारतीय साहित्य के क्षेत्र में, लिखने और ट्रांसलेशन के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टेक्नोलॉजी ने समस्याओं के लिए प्रैक्टिकल मौके और समाधान दोनों दिए हैं। ज़्यादा लोगों के लिए उपलब्ध लोकल लिटरेचर को बदलकर और नया रूप देकर, सिस्टम मौजूदा रिसर्च AI ट्रांसलेशन तकनीकों का इस्तेमाल करके ग्रुप्स तक पहुँच सकते हैं और उन्हें जोड़ सकते हैं। मशीन से बनाए गए लिटरेचर के बढ़ने से लेखकत्व, ओरिजिनैलिटी और इंसानी लिटरेचर की वैल्यू से जुड़े ज़रूरी मुद्दे उठते हैं। लिटरेरी थ्योरिस्ट दिव्या द्विवेदी के अनुसार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को भारतीय साहित्यिक परंपराओं के साथ मिलाने से खास हाइब्रिड आर्ट्स बन सकते हैं, जिसमें कल्चर की खासियतों वाले मशीन एल्गोरिदम सिस्टम दोनों शामिल हों (245)। यह नया फ्रंटियर स्टडी का एक उम्मीद जगाने वाला एरिया लगता है जो कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के तरीकों को इंसानी सूझबूझ के साथ मिलाता है।

वर्चुअल रियलिटी के साथ इमर्शन स्टोरीटेलिंग वर्चुअल रियलिटी और बेहतर टेक्नोलॉजी जैसी मॉडर्न टेक्निकल तरक्की, पढ़ने वालों को अपने सेंस को पूरी तरह से इस्तेमाल करने और अपनी उंगलियों पर दूर की असलियत का अनुभव करने देती है। इन टेक्नोलॉजी को डिजिटल लिटरेचर के हिस्से के तौर पर वर्चुअल कहानियों में भी शामिल किया जा रहा है। इन नई टेक्नोलॉजी को कई भारतीय डेवलपर्स कलाकारों के साथ मिलकर डेवलप कर रहे हैं ताकि पौराणिक कथाओं, लोककथाओं और आज की कहानियों को इमर्सिव तरीके से दोबारा सुनाया जा सके। "महाभारत" और पंचतंत्र जैसी मशहूर कहानियाँ वर्चुअल रियलिटी में एक इमर्सिव डिजिटल अनुभव देती हैं। एक और शानदार अनुभव "महाभारत VR" है, जो इटैलियन कलाकार जियाम्पाओलो टोमासेटी द्वारा बनाया गया सबसे महान महाकाव्य महाभारत का एक वर्चुअल रियलिटी वर्शन है। "पंचतंत्र इंटरैक्टिव" वर्चुअल ऑडियो के साथ दोबारा समझी गई कहानियाँ देता है। रवि सुंदरम कहते हैं कि "इमर्सिव टेक्नोलॉजी भारत की कहानी कहने की परंपराओं के साथ जुड़ाव के नए तरीके दे सकती हैं जो शरीर के अनुभव और भागीदारी वाले इमर्शन पर जोर देती हैं" (301)।

निष्कर्ष

भारत में डिजिटल कहानियों का आना दिखाता है कि लेखक आज की टेक्निकल तरक्की के ज़रिए पारंपरिक साहित्य से कैसे जुड़ते हैं, न कि उसे बिगाड़ते हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म सांस्कृतिक बचाव, कम्युनिटी बनाने और कलात्मक खोज के लिए बेजोड़ मौके देते हैं, लेकिन वे एक्सेसिबिलिटी, कमर्शियलाइजेशन पर रोक और एल्गोरिदम वाले एडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम के मामले में नई सिक्योरिटी रुकावटें भी पैदा करते हैं। भारत में डिजिटल साहित्य का अनोखा नेचर ग्लोबल डिजिटल कल्चर और भारतीय भाषा और

सांस्कृतिक चीजों, साथ ही पारंपरिक बोलकर कहानी कहने के तरीकों और आज की टेक्नोलॉजी की काबिलियत के बीच फायदेमंद संघर्ष का नतीजा है। डिजिटल बदलाव के अपने समय में, भारत नया साहित्य तैयार करेगा जो ऑनलाइन साहित्य के बारे में ग्लोबल बातचीत में अहम भूमिका निभाएगा। दुनिया भर के डिजिटल टेक्नोलॉजी नियमों के साथ जुड़ाव के साथ लोकल मतलब और एनालिसिस को मिलाकर, भारतीय डिजिटल साहित्य अपने सबसे एडवांस्ड सुधारों से गुजरेगा। भारत में डिजिटल कहानियों का विकास टेक्नोलॉजी की तरक्की के साथ-साथ अलग-अलग डिजिटल साहित्यिक परंपराओं को बनाए रखने के लिए संस्थानों, इंफ्रास्ट्रक्चर और एनालिटिकल फ्रेमवर्क की स्थापना पर निर्भर है।

संदर्भ

1. आनंद, एस। "डिजिटल दलित: नया मिडिया और जाति प्रतिरोध में समकालीन भारत।" पत्रिका का डिजिटल संस्कृति , खंड 12, नहीं। 2, 2022, पीपी. 67- 89.
2. दासगुप्ता, अम्लान. डिजिटल उपचार का क्लासिक भारतीय पाठ . ऑक्सफ़ोर्ड रूपर, 2020.
3. द्विवेदी, दिव्या. "एल्गोरिदमिक सौंदर्यशास्त्र और सांस्कृतिक विशिष्टता: ऐ और भारतीय साहित्य परंपराएं।" तुलनात्मक डिजिटल संस्कृतियाँ , संपादित द्वारा संजय कुमार, रूतलेज, 2023, पृ. 234-251.
4. इंटरनेट और गतिमान संगठन का भारत। डिजिटल भारत प्रतिवेदन 2023 . आईएमएआई, 2023.
5. मजूमदार, सैकत. डिजिटल साहित्यिक संस्कृति में दक्षिण एशिया . स्थायी काला, 2021.
6. नायर, रुक्मिणी भया। "डिजिटल ट्रांसलैंग्वेजिंग: भाषाई संकरता भारतीय में ऑनलाइन लिटरेचर." जर्नल दुनिया के साहित्य, खंड 8, संख्या 3, 2022, पृष्ठ 67-89।
7. नायर, प्रमोद के. डिजिटल साहित्यिक अध्ययन करते

- हैं: लिखित, तरीका, अभ्यास । समझदार, 2021.
8. ओरसिनी, फ्रांसेस्का. "डिजिटल पदानुक्रम: भाषा, पहुँच, और साहित्यिक उत्पादन बहुभाषी भारत में।" तुलनात्मक साहित्य अध्ययन, खंड 57, संख्या 2, 2021, पृ. 178-196.
 9. पटेल, अंजलि. "ट्विटर कथा और पुनरुद्धार साहित्य के लघुचित्र में कंटेम्पररी इंडिया." जर्नल ऑफ कॉमनवेल्थ लिटरेचर, वॉल्यूम 46, नंबर 3, 2021, पेज 78-94.
 10. रहमान, तारिक. डिजिटल साहित्यिक समुदाय में दक्षिण एशिया . ब्लूमसबरी, 2022.
 11. राजशेखरन, पी "डिजिटल प्रकाशित करना और क्षेत्रीय भाषा साहित्य: केरल मॉडल।" जर्नल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक पब्लिशिंग, वॉल्यूम 24, नंबर 1, 2021, पेज 143-162।
 12. सिधवा, बापसी. "साउथ एशिया में डिजिटल पब्लिशिंग ट्रेंड्स।" वर्ल्ड साहित्य आज, खंड 95, संख्या 3, 2022, पृष्ठ 34-51.
 13. सुंदरम, रवि. इमर्सिव मिडिया और सांस्कृतिक विरासत में दक्षिण एशिया. शासक यूपी, 2023.
 14. थापर, रोमिला. "डिजिटल अभिलेखागार और पुनर्कल्पना का भारतीय साहित्यिक इतिहास।" डिजिटल मानविकी त्रैमासिक, खंड 14, नहीं। 2, 2022, पीपी. 256-278.
 15. त्रिवेदी, पूनम. "सहयोगी कहानी में डिजिटल भारत: निरंतरता और इनोवेशन।" नया साहित्यिक इतिहास, खंड 52, नहीं। 1, 2021, पीपी. 189-210.

How to Cite This Article

श्रीवास्तव अ. निगम मृ. डिजिटल नैरेटिव्स: भारतीय साहित्य और डिजिटल मीडिया का संगम. International Journal of Multi Research. 2026; 2(3): 13-19.

Creative Commons (CC) License

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International (CC BY-NC-SA 4.0) License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work non-commercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.